घोटल-मोटल के खेल

तुम्हारे लिए इस बार एक नया खेल लेकर आए हैं। इस खेल में एक खिलाड़ी टीम का लीडर होगा। वह शरीर के किसी एक अंग का नाम लेगा और उस पर अपनी उँगली भी रखेगा। जिस अंग का वह नाम लेगा तुम्हें अपने उसी अंग पर उँगली रखना है। जैसे यदि वह आँख कहे तो तुम्हारी उँगली आँख पर होनी चाहिए। यानी तुम्हें इस बात का ध्यान रखना है कि वह क्या कह रहा है। लीडर कई बार कहेगा कुछ और, करेगा कुछ और। मसलन वह कह तो रहा होगा, "पेट!" पर उसकी उँगली होगी अपनी नाक पर। अगर तुम उसके जाल में फँस गए तो आउट। इस खेल में एक बार में कई लोग आउट हो सकते हैं। जो खिलाड़ी आखिर तक आउट नहीं होगा वह अगली बार लीडर बनेगा। यह खेल उतना आसान नहीं जितना लगता है। ज़रा खेल के देखो।

प्रस्तुति - मुकेश मालवीय

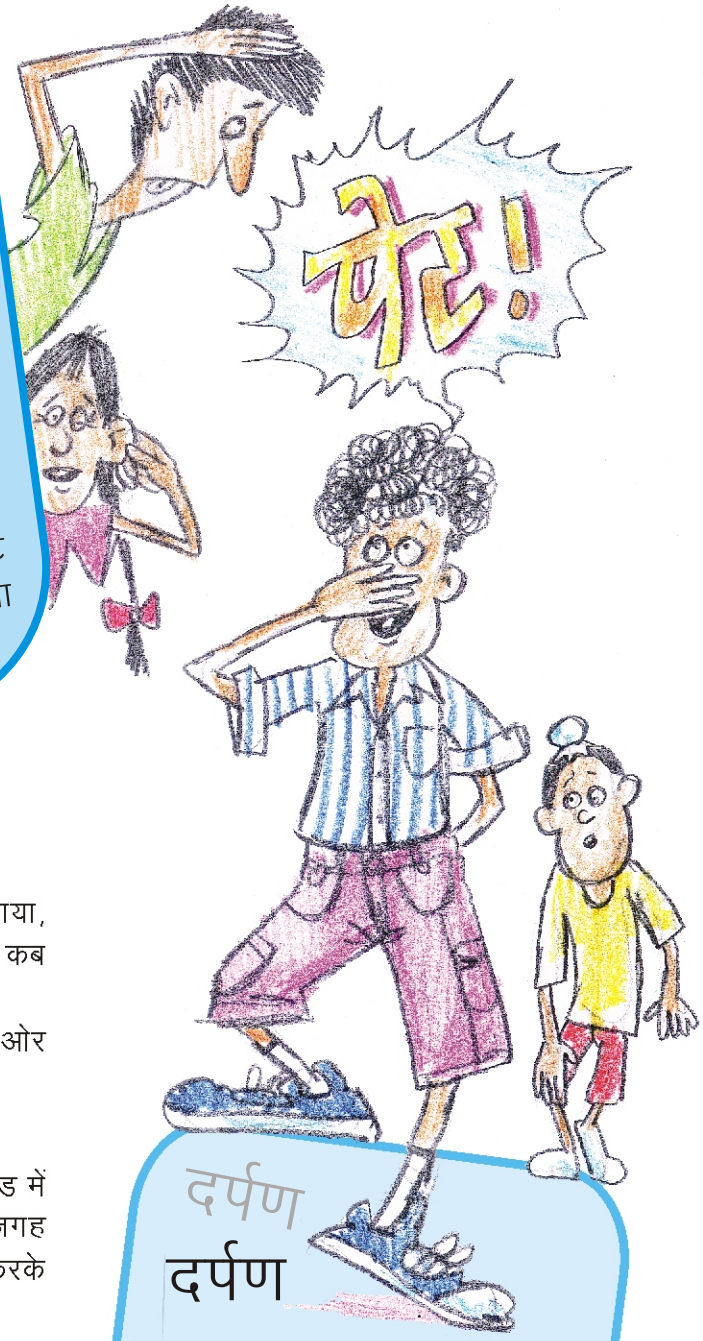

चुटकुले

- लीला शहर से बाहर जाने वाली थी। उसने अपने भाई को समझाया, "देखो मोनू, कल से जो भी चिट्ठी आए उस पर लिख देना कि वह कब आई।"
  जब वह लौटकर आई और डाक देखने लगी तो हर पत्र पर एक ओर लिखा था, "आज आई है।"

- मनुष्य भी अजब घोंचू होते हैं। यदि तुम किसी से कहोगे कि ब्रह्माण्ड में 3704553703 तारे हैं तो वह फौरन मान लेगा। लेकिन किसी जगह "ताजा रंग किया है" का नोटिस देखेगा तो वहाँ उँगली खराब करके ज़रूर देखेगा।

- दो दोस्त रेलगाड़ी में यात्रा कर रहे थे। भीड़ बहुत थी और वे जिस डिब्बे में बैठे थे, वह आखिरी डिब्बा था।
  पहला, दूसरे से, "यार, यहाँ तो बहुत भीड़ है।"
  दूसरा , "ज़रा गाड़ी चलने दो, फिर देखना।"
  जब गाड़ी चलने में दो मिनट रह गए तो उसने साँप-साँप कहकर शोर मचा दिया, जिससे बाकी यात्री डरकर भाग गए, तो उसने अपने दोस्त से कहा, "अब बेशक आराम से सो जाओ।" लेकिन जब वे सोकर उठे तो वहीं के वहीं थे। उन्होंने एक कुली को बुलाकर माजरा पूछा तो उसने बताया, किसी ने अफवाह उड़ा दी थी कि इस डिब्बे में साँप है तो स्टेशन मास्टर ने उस डिब्बे को कटवा दिया और गाड़ी चली गई।

दर्पण

दर्पण का इस्तेमाल तो तुमने किया ही होगा। लेकिन क्या तुमने दर्पण के मज़ेदार खेल भी खेले हैं? एक खेल यह भी है:

दर्पण की पट्टी को कागज़ पर खड़ा करो। अब दर्पण में देखते हुए अपना नाम या जो भी तुम लिखना चाहो कागज़ पर लिखो। ध्यान रहे कि लिखते समय दर्पण में देखना है, कागज़ पर नहीं।